

63	समौ विश्रम्भविश्वासौ	18
64	परिणामस्तु विक्रिया ॥ १५१८ ॥	28
65	चक्रावर्तो भ्रमो भ्रातिर्भ्रमिर्धूर्णिश्च धूर्णनि ।	38
66	विप्रलम्भो विसंवादो	48
67	विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १५१९ ॥	58
68	उपलम्भस्त्वनुभवः	68
69	प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।	78
70	नियोगे विधिसंप्रेषौ	88
71	विनियोगो ऽर्पणं फले ॥ १५२० ॥	98
72	लवो ऽभिलावो लवनं	108
73	निष्पावः पवनं पवः ।	118
74	निष्ठीवष्ठीवनश्चूतष्टेवनानि तु धूत्कृते ॥ १५२१ ॥	128
75	निवृत्तिः स्यादुपरमो व्यवोपाङ्म्यः परा रतिः ।	138
76	विधूननं विधुवनं	148
77	रिद्धिणं स्वलनं समे ॥ १५२२ ॥	158
78	रक्षणास्त्राणे	168
79	ग्रहो ग्राहे	178
80	व्यधो वेधे	188

63. Vertrauen (2 W.). — 64. Veränderung (2 W.). — 65. Umdrehung (6 W.). — 66. Hintergehen (2 W.). — 67. Freigebigkeit (2 W.). — 68. Wahrnehmung (2 W.). — 69. Empfangen, Erhalten (2 W.). — 70. Auftrag (3 W.). — 71. Geben, mit Aussicht auf Vergeltung. — 72. Kornschneiden (3 W.). — 73. Kornreinigung (3 W.). — 74. Speien (5 W.). — 75. Aufhören (6 W.). — 76. Bewegung (2 W.). — 77. Ausgleiten (2 W.). — 78. Schutz (2 W.). — 79. Greifen (2 W.). — 80. Durchbohren (2 W.).